515

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट–5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2405**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Puran

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 5, 9 August 24

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]: 1 7 0 2 2 8 4

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में से प्रमुख भाषा है। भारत के विभिन्न राज्यों में से ज्यादातर राज्यों इसे बोला या समझा जाता है।

यदि क्षेत्रीय दृष्टिकोण से देखें तो इसके विस्तार को विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है। प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत वे राज्य आते हैं, जहाँ हिंदी को प्राथमिकता से बोला और समझा जाता है, ऐसे राज्यों में मुख्यतः उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली इत्यादि राज्य आते हैं।

द्वितीयक क्षेत्र के रूप में ऐसे राज्य आते हैं, जहाँ कि मातृभाषा हिंदी नहीं है, किंतु वहाँ के लोग कम-ज्यादा रूप में हिंदी को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को बोलते हैं या समझते हैं। ऐसे राज्यों में पंजाब, गुजरात, प. बंगाल, महाराष्ट्र जैसे राज्य आते हैं।

वहीं दक्षिण भारत के राज्यों में यद्यपि हिंदी का प्रचलन कम दिखायी पड़ता है, किंतु दक्षिण के कुछ हिस्सों में भी 'दक्खिनी हिंदी' के रूप में हिंदी का प्रयोग दिखायी पड़ता है। ऐसे क्षेत्रों में 'हैदराबाद' इत्यादि क्षेत्र प्रमुख है।

वहीं विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों की उपस्थिति ने हिंदी को लोकप्रिय बनाया है। फिजी, त्रिनिदाद, टोबेगो सहित यूरोप व अमेरिका में हिंदी का प्रयोक्ता वर्ग पिछले कुछ वर्षों में बढ़ा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कांग्रेस के गरम दल के प्रमुख नेताओं में शामिल थे।

राजनीतिक जीवन के दौरान वे 'स्वराज' और 'स्वदेशी' के पक्ष में रहे-

" स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

इसी रूप में उन्होंने 'स्वदेशी भाषा' के रूप में हिन्दी का व्यापक समर्थन किया।

तिलक के अनुसार स्वराज्य की भावना जगाने के लिये पूरे राष्ट्र में एक भाषा ऐसी होनी चाहिये, जो राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांध सके।

इस दृष्टिकोण से उन्होंने 'हिंदी' को 'राष्ट्र भाषा' के दर्जे के लिये

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सबसे उपयुक्त भाषा के रूप में स्वीकार्यता प्रदान की।

उन्होंने 'हिन्दी भाषा' के प्रचार-प्रसार के लिये 'देवनागरी लिपि' के विकास-क्रम में योगदान देते हुये 'तिलक फान्ट्स' का आविष्कार किया।

वहीं कांग्रेस के अधिवेशनों, तथा गणेशोत्सव एवं शिवाजी जयंती जैसे कार्यक्रमों में भी अक्सर हिंदी का प्रयोग करते थे।

इस रूप में राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी के विकास में 'लोकमान्य तिलक' का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

भाषा के मानकीकरण से तात्पर्य भाषा के ऐसे मानक स्वरूप के विकास की प्रक्रिया से है, जो व्याकरणिक एवं भाषिक दृष्टि से शुद्ध एवं पारिभाषिक दृष्टिकोण से एकरूपता लिये हुये है।

इस रूप में हिंदी भाषा के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सबसे अग्रिम पंक्ति के भाषाविदों में प्रमुख थे।

हिंदी भाषा के मानकीकरण आंदोलन का नेतृत्व करते हुये आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये, जिनमें से प्रमुख थे –

(1.) हिंदी में अन्य भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2.) 'जिन्ने', 'उन्ने', 'जिन्का' इत्यादि जैसे प्रयोग त्यागें जायें।

(3.) हिन्दी में लिखित रूप में 'मैं' का प्रयोग 'एकवचन' के लिये तथा 'हम' का प्रयोग 'बहुवचन' में ही किया जाये।

(4.) 'वैज्ञानिक शब्दावली' के संदर्भ में अंग्रेजी के सामान्य प्रचलित शब्दों का प्रयोग कर सकते है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में ही 'अयोध्या प्रसाद खत्री' जैसे नेताओं ने खड़ी बोली हिंदी के आंदोलन को आगे चलकर मजबूती दी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ साहित्य का संबंध वस्तुतः नाथ संप्रदाय से है। 'नाथ संप्रदाय' के साधुओं ने 'सिद्धों' की 'भोग प्रधान साधना पद्धति' के विरोध में 'संयम आधारित साधना' पद्धति को अपनाया।

इसी से संबंधित मान्यताओं के प्रचार-प्रसार के लिये इन्होंने जिस साहित्य की रचना की, उसे ही 'नाथ साहित्य' के रूप में जाना गया।

नाथ मुनियों में गोरक्षनाथ, चर्पटीनाथ, भीमनाथ इत्यादि कुल नौ गुरु थे।

इनकी काव्य रचनाओं में कहीं-कहीं खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप दिखायी देता है, जैसे -

"नौ लख पातरि आगे नाचे, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस उदाहरण में संख्यावाची विशेषण का प्रयोग वस्तुतः खड़ी बोली हिंदी का ही आरंभिक प्रभाव है। वहीं 'हैं', 'खैलैं' जैसे शब्दों का प्रयोग 'ब्रज भाषा' के समान है, जो आरंभिक खड़ी का ही प्रभाव है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण से तात्पर्य कम्प्यूटर पर मुद्रण एवं टंकण के रूप में देवनागरी लिपि के प्रयोग से है।

इस दृष्टि से कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयासों में हैदराबाद स्थित HCIL कंपनी ने शुरुआती प्रयास किये। ~~क~~ 'फोट्रॉन' नामक सॉफ्टवेयर के आविष्कार से हिंदी का प्रयोग कंप्यूटर में होने लगा।

वहीं आगे चलकर पुणे स्थित C-DAC संस्था ने भी 'शाब्दिका' जैसे प्रोग्राम के ~~बाद~~ ~~से~~ माध्यम से हिंदी लिपि के कंप्यूटरीकरण के प्रयास किये।

इसी दिशा में 'यूनीकोड' के आविष्कार ने 'देवनागरी लिपि' के कम्प्यूटरीकरण की दिशा में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

क्रांतिकारी परिवर्तन किये। यूनीकोड वस्तुतः 16 बिट का प्रोग्राम था, जिसकी वजह से 65000 से अधिक वर्णों का लेखन संभव हो सका।

वहीं आगे चलकर 'इन्स्क्रिप्ट' की-बोर्ड के आविष्कार ने की-बोर्ड पर देवनागरी लिपि की टाइपिंग को आसान बना दिया। बाद में इसे आधिकारिक रूप से भी अपना लिया गया। इस की-बोर्ड में दांयी ओर 'अक्षर' तथा बांयी ओर मात्रायें थी। जिससे टाइपिंग में सुविधा ~~होती~~ हुयी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर नातिदीर्घ निबंध लिखिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विस्तार पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का विकास एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम थी।

ब्रजभाषा के विकास की यह परंपरा मध्यकाल में आरंभ हुई। हालांकि इससे पूर्व भी खुसरो तथा चंदरबरदाई के काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग दिखाई पड़ता है, किंतु भक्तिकाल में सूर के हाथों में पड़कर 'ब्रजभाषा' श्रृंगार रस की प्रमुख काव्य भाषा बन गयी।

विशेष बात है कि ब्रजभाषा का आरंभिक दौर होते हुये भी सूर की ब्रजभाषा अपने चरम-स्तर को छूती हुई प्रतीत होती है।

आचार्य शुक्ल ने सूर की ब्रजभाषा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की प्रशंसा करते हुये कहा है कि-

"सूर के हाथों में पड़कर भाषा
मानो घिसकर चिकनी हो गई
है।"

सूर की ब्रजभाषा का एक ऐसा ही सुंदर उदाहरण द्रष्टव्य है-

"लोचन जल कागद मसि मिलिकै
ह्वै गयी स्याम स्याम की पाती"

हालाँकि ब्रजभाषा का संपूर्ण विकास आगे चलकर 'रीतिकाल' में देखने को मिलता है। दरबार के श्रृंगार रस के साहित्य में 'ब्रजभाषा', रीतिकाल में एकमात्र काव्यभाषा के रूप में स्थापित हो जाती है।

हालाँकि उस काल में भी ब्रजभाषा के दो स्वरूप दिखाई पड़ते हैं। एक स्वरूप श्रृंगार की केंद्रीय प्रधानता के रूप में 'बिहारी'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे रीतिसिद्ध कवियों की रचनाओं में दिखाई पड़ता है, जहाँ संयोग वर्णन में ब्रजभाषा का माधुर्य और कोमलकांत पदावली अद्भुत सौंदर्य उत्पन्न करते है -

कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौनुं में करत हैं, नैननुं हीं सौं बात"

'बिहारी' जैसे रीतिसिद्ध कवियों की ब्रजभाषा में सुंदर समास-गुण, समाहार क्षमता तथा अलंकार प्रियता दिखती हैं जो दरबारी पाठकों को आनंदित कर देती है।

वहीं रीतिकाल में ही ब्रजभाषा का एक अन्य स्वरूप रीतिमुक्त कवियों के साहित्य में दिखायी देता है।
ब्रजभाषा का यह स्वरूप दैहिक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य पर आधारित न होकर भावनात्मक सौंदर्य पर आधारित हैं, जो पाठक को भीतर तक 'प्रेम की पीर' से भर देता है।

'घनानंद' की रचना का एक ऐसा ही उदाहरण द्रष्टव्य है -

'उजरनि बसी है हमारी अँखियन देखो'

इस रूप में रीतिकाल में ब्रजभाषा का विस्तार अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में हुआ, जिसे भिखारीदास ने भी दर्शाया है -

"ब्रजभाषा हेत ब्रजवास ही न अनुमानौं,
ऐसे ऐसे कवित की बानी है सो जानियें।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी की क्रिया-व्यवस्था, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं से भिन्न है।

वस्तुतः 'क्रिया' से तात्पर्य वाक्य के उस पद से है जिससे किसी कार्य/वस्तु का करना/होना पाया जाता है।

उदा० → राहुल खाना खाता है।

↳ उपरोक्त उदाहरण में 'खाता' मुख्य क्रिया तथा 'है' सहायक क्रिया है।

जहां अंग्रेजी में क्रिया का स्थान प्रायः कर्ता व कर्म के मध्य में होता है (S-V-O), जैसे

उदा० ⇒ Ram Killed Ravan
(Killed — क्रिया)

वहीं हिंदी में क्रिया प्रायः कर्म के पश्चात स्थान ग्रहण करती है -

⇒ राम ने रावण को मारा।
(मारा — क्रिया)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर्म के आधार पर क्रिया को दो भागों में विभक्त किया जाता है -

(i) अकर्मक क्रिया → जिसमें कर्म उपस्थित न हो।

↳ उदा॰ - राहुल गया।

(ii) सकर्मक क्रिया → जिसमें 'कर्म' पद की उपस्थिति हो।

↳ उदा॰ - राहुल जयपुर (कर्म) गया (क्रिया)।

वहीं वाक्य में महत्व के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है -

(i) मुख्य क्रिया → जो कार्य मुख्य रूप से होता है, जैसे - वह दौड़ता है।

यहाँ 'दौड़ता' - मुख्य क्रिया है।

(ii) सहायक क्रिया → सहायक क्रिया

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुख्य क्रिया के सहायक के रूप में क्रिया के काल का निदर्शन कराती है -

↳ उदा॰ → वह आम खाता है।
उसने आम खाया था।

यहा 'है' तथा 'था' सहायक क्रियायें है, जो काल का बोध कराती है।

इस रूप में हिंदी की 'क्रिया - व्यवस्था' विकारी पद है, जो कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तित होती है - उदा॰ -

राकेश सोता है।
रानी सोती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

सूफी काव्यधारा, भक्ति काल की प्रेमाश्रयी काव्यधारा थी, जिसने काव्य भाषा के रूप में 'अवधी' की स्थापना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

~~सूफी की भाषा~~

सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त 'अवधी' की भाषिक प्रवृत्ति स्वयं में विशिष्ट थी। इसका कारण है कि सूफी कवियों ने अवध क्षेत्र में प्रचलित लोक-आख्यानों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। यही कारण है कि उनकी अवधी में स्थानीयता की खालिस मिठास दिखायी पड़ती है।

इस संदर्भ में 'मुल्ला दाऊद' की रचनाओं में आरंभिक प्रवृत्ति देखी जा सकती है -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"दाऊद कवि जौ चँदा गाई
जेहि रे सुना जो गा मुरझाई"

उपरोक्त उदाहरण में 'आकारांतता' की प्रवृति देखी जा सकती है, जो अवधी की मुख्य विशेषता है। 'चँदायन' या 'लोरिकहा' नामक रचना में 'मुल्ला दाऊद' ने अवधी की अन्य भाषिक प्रवृतियों को दर्शाया है।

कुतुबन की 'मिरगावती' व उस्मान की 'हँस जवाहिर' नामक रचनाओं में भी 'अवधी' की खालिस प्रवृति देखने को मिलती है।

हालाँकि अवधी का सबसे मधुर स्वरूप मलिक मुहम्मद 'जायसी' की रचनाओं में देखने को मिलता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उनकी प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' में अवधी की 'खालिस मिठास' अत्यंत मनमोहक है -

"यह तन जारौं छार के, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाँव"

यहीं नहीं जायसी की अवधी में अवध क्षेत्र की स्थानीयता की 'खालिस बेमेल मिठास' है, जिसके कारण आचार्य शुक्ल ने उन्हें 'अवधी का अरघान' कहा है।

उदाहरण के लिये 'दवंगरा' (प्रथम बारिश), 'विषहर' (विषधर) जैसे शब्द जो अवध क्षेत्र में प्रचलित थे, उनका सुंदर प्रयोग जायसी ने किया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राजस्थानी हिन्दी' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो खड़ी बोली हिंदी के आदि कवि माने जाते हैं। गुलाम वंश और खिलजी वंश के कई राजाओं के दरबार में रह रहे तथा उत्कृष्ट काव्य की रचना की।

इनकी रचनाओं में पहेलियाँ, दो सुखने इत्यादि प्रमुख थे, जिनमें खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप दिखायी पड़ता है। इस भाषा को वे 'हिन्दवी' कहते थे, तथा स्वयं को उन्होंने 'तूती-ए-हिंद' कहा है।

इनकी रचनाओं में खड़ी बोली का स्पष्ट स्वरूप देखा जा सकता है -

पान क्यों सड़ा
घोड़ा क्यों अड़ा
- फेरा न था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा,
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे"

उपरोक्त उदाहरणों में 'आकारांतता', 'से' कारकों का प्रयोग इत्यादि स्पष्ट रूप से खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूपों का निदर्शन करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

'कन्नौजी' बोली मुख्यतः प्राचीन 'कान्यकुब्ज' क्षेत्र में प्रचलित बोली थी, जिसका वर्तमान क्षेत्र उत्तर-प्रदेश तथा मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में पड़ता है।

'कन्नौजी' बोली की प्रमुख विशेषतायें निम्न प्रकार है -

1. यह 'पश्चिमी हिंदी' वर्ग की बोली
2. 'ओकारांत' बोली - चल्यो।
3. म → 'ब' में परिवर्तित
   बबूल - बमूरा
4. अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति -
   धोखा → धोका

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(S.)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में कई अन्य कारकों के साथ 'प्रेस' के आविष्कार ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'प्रेस' के कारण 'ईसाई मिशनरियों' ने अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये पुस्तकों एवं बाईबिल का प्रकाशन करवाकर आमजन तक पहुँचाया। टॉमस कोल ब्रुक तथा पोप चेम्बरलीन ने 'बाईबिल' का 'हिंदी अनुवाद' कर इसे लोगों के पठन-पाठन के लिये उपलब्ध करवाया।

वहीं बाद में भारतीय समाज सुधारकों तथा लेखकों ने भी प्रेस के माध्यम से पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर 'खड़ी बोली' के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजा राममोहन राय के 'मिरात-उल अखबार', स्वामी दयानंद सरस्वती के 'सत्यार्थ प्रकाश', भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा 'कविवचनसुधा' जैसी पत्रिकाओं तथा भारतेंदु मंडल के अन्य सदस्यों प्रताप नारायण मिश्र के 'ब्राह्मण' तथा बालकृष्ण भट्ट के 'हिंदी प्रदीप' जैसे पत्रों के प्रकाशन के माध्यम से खड़ी बोली का घर-घर में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

श्रद्धाराम फिल्लौरी की 'ओम-जय-जगदीश' आरती की मुद्रित प्रतियां भी घर-घर पहुँच गयी।

इस रूप में 19वीं सदी में 'प्रेस' ने 'खड़ी बोली' के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'ब्रजभाषा', 'शौरसेनी अपभ्रंश' से विकसित 'पश्चिमी हिंदी वर्ग' की प्रमुख बोली है, जिनका प्रयोक्ता क्षेत्र मथुरा, आगरा, भरतपुर (राजस्थान) सहित ब्रजमंडल का संपूर्ण क्षेत्र है।

ब्रजभाषा की प्रमुख व्याकरणिक विशेषतायें निम्नलिखित है -

- ब्रजभाषा एक 'ओकारांत' भाषा है -
  उदा. → गयौ, जाऊंगो।
- ब्रजभाषा में ऐ, औ का उच्चारण इसी रूप में होता है -
  जावै, उधौ
  - " उधौ कोकिल कूजत कानन"
- सर्वनामों के अंतर्गत तुम, हमारो, मोहि जैसे प्रयोग -

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

– "तुम हमको उपदेश करत है ---"

– " उजरिन बसी है हमारी अँखियन देखो"

- **लिंग - व्यवस्था** :- स्त्रीलिंग बनाने के लिये न, अन, इ, ई इत्यादि का प्रयोग –

  'अँखियन', 'सौतिन', 'जननी'

- **वचन - व्यवस्था** :- बहुवचन बनाने के लिये 'अन', का प्रयोग द्रष्टव्य

  आँखे – अँखियन

- **विशेषण - व्यवस्था** → सार्वनामिक विशेषणों का प्रयोग –

  " वह मथुरा काजर की कोठरी ---"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

भारतीय संविधान के भाग-17 के अंतर्गत अनुच्छेद 343-351 के अंतर्गत राजभाषा के संबंध में प्रावधान किये गये थे।

इसके तहत संविधान लागू होने के 15 वर्ष पश्चात अर्थात 1965 में 'हिंदी' को एकमात्र 'राजभाषा' बनाया जाना था।

किंतु दक्षिणी भारत के उग्र हिंदी विरोधी आंदोलन के कारण राजभाषा अधिनियम, 1963 लाया गया।

इसके प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित थे-

1. 1965 के पश्चात भी राजभाषा के रूप में अंग्रेजी व हिंदी दोनों का प्रयोग यथावत रहेगा।

2. सभी राजकीय पत्राचारों, विधेयकों,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

माध्यम हिंदी व अंग्रेजी दोनों रहेंगे।

3. राज्यों के भीतर स्थानीय भाषाओं को राजभाषा का दर्जा देकर कार्यालयी प्रयोग किया जा सकेगा।

4. ~~हिन्दी~~ के राजभाषा के रूप में प्रचार-प्रसार के लिये विशेष प्रयास किये जायेंगे।

इस रूप में राजभाषा अधिनियम, 1963 वस्तुतः दक्षिणी भारत के हिंदी विरोधी आंदोलन की अग्नि को शांत करने का माध्यम बना। हालांकि आगे चलकर 1968 के राष्ट्रपति के आदेश के तहत 'त्रिभाषा सूत्र' को अपनाकर 'हिंदी' को 'अहिंदी भाषी' क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाने के प्रयास किये गये।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता -आंदोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास एक सुदीर्घ प्रक्रिया थी, जिसमें विभिन्न महान व्यक्तियों एवं संस्थाओं ने अपना योगदान दिया।

इसी रूप में महात्मा गाँधी ने भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1918 के 'इंदौर साहित्य सम्मेलन' में गाँधी जी ने 'हिंदुस्तानी' भाषा, जो खड़ी बोली हिंदी का ही एक रूप था, का पक्ष लेते हुये इसे 'राष्ट्र भाषा' व 'स्वराज्य' के प्रश्न से जोड़ा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाँधी जी का कहना था कि -
" स्वराज्य करोड़ों भूखे मरने वाले एवं अन्त्यजों का है और उनकी भाषा 'हिंदी' ही हो सकती है।"

महात्मा गाँधी की प्रेरणा से देशभर में सैंकड़ो गाँधीवादी कार्यकर्ता, 'हिंदी प्रचारक' बनकर विभिन्न राज्यों में गये तथा हिंदी को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया।

उनकी प्रेरणा से महाराष्ट्र के वर्धा में 'हिन्दी प्रचार समिति' का गठन हुआ।
वहीं 1923 के 'काकिनाडा कॉंग्रेस अधिवेशन' में भी गाँधीजी की प्रेरणा से ही हिंदी को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक सम्मेलनों में प्रयोग की बात कही गयी।

यहाँ से प्रेरणा लेकर हार्डीकर, कुरूर नीलकंठन जैसे नेताओं ने दक्षिणी भारत के राज्यों में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभाओं' की स्थापना की।

'राजमहेन्द्रम' व 'त्रिवेंद्रम' जैसे शहरों में 'हिंदी शिक्षकों' के प्रशिक्षण हेतु विद्यालय खोले गये।

वहीं महात्मा गाँधी जी के मार्गदर्शन में 'काका कालेलकर' के संयोजकत्व में 'नागरी लिपि सुधार समिति' का भी गठन किया गया, जिसने देवनागरी लिपि में सुधार हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

महात्मा गाँधी के पुत्र भी 'हिंदी प्रचारक' बनकर हिंदी की सेवा में लगे रहे।

इस रूप में कहा जा सकता है कि 'महात्मा गाँधी' ने आगे बढ़कर पूर्ण समर्पण के साथ 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के सार्थक प्रयास किये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि के संबंध पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि का उद्भव ब्राह्मी लिपि से ही हुआ है।

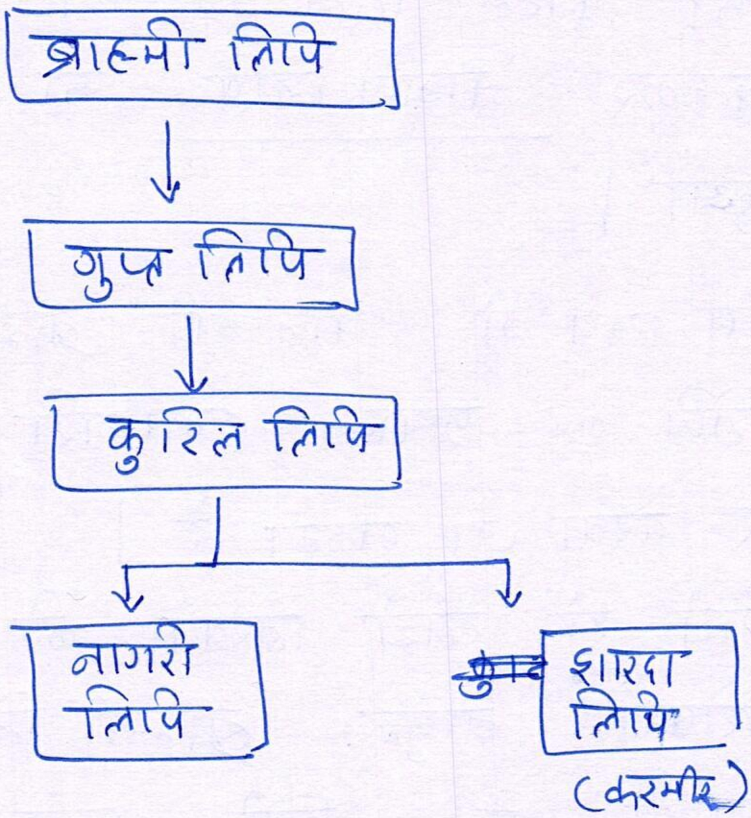

ब्राह्मी लिपि से ही 3-4 वीं सदी में गुप्तवंशीय राजाओं के दौर में 'गुप्त लिपि' का जन्म हुआ।
आगे चलकर 6-7 वीं सदी में कुटिल लिपि का जन्म हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आकृतिगत कुटिलता के कारण इसे कुटिल लिपि के नाम से जाना गया।
इसी कुटिल लिपि से ही आगे चलकर 'नागरी लिपि' का जन्म हुआ।

इस रूप में आज भी ब्राह्मी लिपि का प्रभाव देवनागरी लिपि पर देखा जा सकता है।
बांये से दांये लिखने की विशेषता वस्तुत: ब्राह्मी लिपि की ही थी, जिसे सम्राट अशोक के कुछ शिलालेखों में भी देखा जा सकता है।
यही विशेषता देवनागरी लिपि की भी प्रमुख विशेषता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' के योगदान पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना 1893 में काशी में हुयी।

इसका उद्देश्य 'हिंदी' भाषा एवं लिपि को लोकप्रिय बनाना था।

'नागरी प्रचारिणी सभा' के नेतृत्व में ही आगे चलकर 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' का आयोजन होने लगा, जिसने हिंदी के प्रचार-प्रसार को द्रुत गति दी।

इस सभा से मदन मोहन मालवीया, काका कालेलकर जैसे महापुरूषों का जुड़ाव रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सभा द्वारा हिंदी के प्रचार प्रचार के लिये पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता था।
वहीं नगरों-देहातों में नष्ट हो रहे साहित्य के संरक्षण हेतु भी सभा ने विशेष प्रयास किया।

'सरस्वती' पत्रिका का ~~आयो~~ प्रकाशन कर हिंदी को लोकप्रिय बनाया गया।

वहीं हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये छात्रवृत्ति, पुरस्कार देना, संगोष्ठियों का आयोजन करना इत्यादि कार्यों के माध्यम से सभा ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास में अप्रतिम योगदान दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation